दिनांक 5 मार्च, 2020 को विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग में आयोजित राष्ट्रीय एकता शिविर के समापन समारोह में माननीया राज्यपाल जी के अभिभाषण के मुख्य बिन्दुः-

- भू-दान यज्ञ के प्रणेता संत विनोबा भावे के नाम पर स्थापित इस विद्यालय में युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार, राष्ट्रीय सेवा योजना, क्षेत्रीय निदेशालय एवं राष्ट्रीय सेवा योजना प्रकोष्ठ, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग के द्वारा आयोजित राष्ट्रीय एकता शिविर में अपने ऊर्जावान युवाओं के बीच सम्मिलित होकर अपार प्रसन्नता हो रही है।

- मुझे अवगत कराया गया है कि इस राष्ट्रीय एकता शिविर का आयोजन दिनांक 28 फरवरी से 5 मार्च अर्थात आज तक के लिए किया गया है। अभी दो बच्चों ने अपने अनुभव बताये। उन्हें यह एहसास नहीं हुआ कि वे घर से बाहर हैं, उनका समय कैसे कट गया? विविधता में एकता ही हमारी विशिष्ट पहचान है।

- इस शिविर में झारखण्ड सहित देश के 13 राज्यों के राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों की भागीदारी रही, यह प्रसन्नता का विषय है। इसके लिए इसके आयोजन से जुड़े सभी सदस्यों को बधाई देती हूँ। इसमें राष्ट्रीय सेवा योजना के लगभग 200 स्वयंसेवकों तथा कार्यक्रम पदाधिकारी (Team Leader) की सहभागिता उत्साहित करनेवाली है।

- शिविर के दिनचर्या में योग, ध्यान, युवतियों के लिए आत्म–सुरक्षा का प्रशिक्षण, श्रमदान, बौद्धिक सत्र एवं शाम को सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया जाना सार्थक पहल है। यह शिविर विविधता में एकता का सुन्दर परिचायक है। यहाँ विभिन्न राज्यों के स्वयंसेवकों ने अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रदर्शन किया होगा।

मेरे प्यारे युवाओं!

- हमारे देश को आपसे असीम आशाएँ हैं। राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक दशाएँ आप पर ही निर्भर हैं। इसलिए आपके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास आवश्यक है, जीवन में सदैव अनुशासन एवं समर्पण की भावना से कार्य करें। हर्ष है कि हमारे देश के युवा राष्ट्रीय सेवा योजना (N.S.S.) में सम्मिलित होकर अपनी ऊर्जा को रचनात्मक एवं सकारात्मक दिशा प्रदान कर रहे हैं। हमारे विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने के साथ–साथ सामाजिक दायित्व की दिशा में भी कार्य कर रहे हैं तथा राष्ट्र के एक जिम्मेदार नागरिक बनने के पथ पर अग्रसर हैं, यह सराहनीय है।

- N.S.S. के माध्यम से हमारे विद्यार्थी इसकी विभिन्न गतिविधियों– साक्षरता, पर्यावरण सुरक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता जैसे कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता पैदा करने में अपनी सक्रिय भागीदारी प्रदान कर रहे हैं। साथ ही विश्वास है कि वे सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों से अवगत होकर अन्य को भी जागरूक करने हेतु प्रयास कर रहे

होंगे। मेरी दृष्टि में, विद्यार्थी जीवन से ही इस प्रकार के कार्यों में भाग लेने से समाज सेवा या राष्ट्र सेवा की भावना और प्रबल होती है और आदर्श नागरिक बनने के लिए इन गुणों का विकास अति आवश्यक है।

- राष्ट्रीय सेवा योजना का संपूर्ण उद्देश्य शिक्षा के आयाम को विस्तारित करते हुए युवा छात्रों को सामुदायिक सेवा के प्रति उन्मुख करना है। भारत में छात्रों को राष्ट्र सेवा में हिस्सेदारी निभाने का विचार राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का था। उनके इस विचार की केन्द्रीय धुरी में स्वयं से पहले सामाजिक जिम्मेवारी की चेतना को जागृत करना रहा है।

- महात्मा गांधी के मतानुसार छात्रों के अध्यापन काल को केवल बौद्धिक विलासिता का अवसर मात्र ही नहीं समझना चाहिए, बल्कि उन्हें इस अवसर को समाज एवं राष्ट्र के आवश्यक सेवा में संपूर्ण निष्ठा के साथ अपने को तैयार कर राष्ट्र को समर्पित करने पर जोर देना चाहिए। उन्होंने छात्रों से यह भी आग्रह किया था कि वे अपने शिक्षण संस्थानों के निकटवर्ती समुदायों के मध्य लोगों से संपर्क स्थपित करें तथा कुछ ऐसा सकारात्मक कार्य करें जिससे उन ग्रामीणों के भौतिक एवं नैतिक जीवन के स्तर में सुधार लाया जा सके।

- हमारा राष्ट्र विभिन्न क्षेत्रों में तेज गति से प्रगति कार्य कर रहा है, सम्पूर्ण विश्व की निगाहें हमारे राष्ट्र की गतिविधियों की ओर है। हमने अपनी दक्षता से विभिन्न क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित कर पूरे विश्व को आश्चर्यचकित कर दिया

है। आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हमारी विशिष्ट पहचान है, लेकिन देश के समक्ष आज भी कई चुनौतियाँ जैसे– अशिक्षा, कुपोषण, अंधविश्वास, दहेज–प्रथा, डायन–प्रथा एवं छुआ–छूत जैसी सामाजिक कुरतियाँ व्याप्त हैं। इस परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र और समाज को आपसे बहुत अपेक्षायें है।

➢ राष्ट्रीय सेवा योजना हमारे विद्यार्थियों की सामाजिक चेतना को और समृद्ध करने का कार्य करते हैं। उनमें **Team Sprit** एवं **Leadership** की भावना को विकसित करने के साथ–साथ उच्च चरित्र, आदर्श तथा एक–दूसरे के प्रति सहयोग की भावना विकसित करने के कार्य में सार्थक होती है। लेकिन राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों की संख्या अभी आशानुकूल नहीं हैं। जरूरत है इसे अधिक–से–अधिक बढ़ाए जाने का। मेरा यह मानना है गांधी जी के मूल्यों एवं सिद्धांतों को अपनाते हुए राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से इस कमी को पूरा किया जा सकता है। वे अधिक–से–अधिक ग्रामों को गोद लें और वहाँ के पिछड़ेपन को दूर करें, इस कार्य में विश्वविद्यालय की अहम भूमिका है, इस दायित्व का वे निर्वहन करें।

➢ मुझे विश्वास है कि आप अपनी एकजुटता, साहस, अनुशासन और सक्रियता से सभी चुनौतियों का मुकाबला करके सफलता अर्जित कर राष्ट्र एवं समाज के एक अच्छे नागरिक होने का बेहतर उदाहरण पेश करेंगे।

जय हिन्द!